एकात्म मानव दर्शन – एक सार्वभौमिक व्यावहारिक दर्शन

कुलदीप कुमार भारती
प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग, बृहस्पति महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक दार्शनिक, सामाजिक, राजनितिज्ञ और अर्थशास्त्री थे। इनके द्वारा प्रस्तुत दर्शन 'एकात्म मानव दर्शन' या 'एकात्म मानववाद' कहलाता है। एकात्म मानव दर्शन मानव जीवन और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के एकमात्र सम्बन्ध का दर्शन है। एकात्म मानव दर्शन का उद्देश्य एक ऐसा 'स्वदेशी सामाजिक एवं आर्थिक मॉडल' समाज में दिखाना था, जिसमें विकास का केंद्र–बिंदु एकमात्र मानव हो। एकात्म मानव दर्शन के केंद्र में मानव, मानव से जुड़ा हुआ परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ समाज फिर जाति फिर राष्ट्र फिर विश्व और फिर अनंत ब्रह्माण्ड आता है। उन्होंने एक जातिविहीन, वर्गविहीन और सामाजिक–संघर्षविहीन सामाजिक व्यवस्था पर जोर दिया था। उन्होंने एक ऊँच–नीच विहीन समाज की कल्पना की थी। एकात्म मानव दर्शन एकमात्र दर्शन है जिसमे मानव–मात्र हेतु अत्यंत गहन और समग्रता से चिंतन प्रस्तुत किया गया है। (1)

एकात्म मानव दर्शन या मानववाद के रूप में पंडित दीनदयाल उपध्याय ने भारत की तत्कालीन राजनीति और समाज को उस मार्ग पर जाने की दिशा दिखाई थी जो पूर्णरूपेण भारतीय हो। अपने एकात्म मानव दर्शन के इस महान वैज्ञानिक व वैचारिकपूर्ण दर्शन का प्रस्तुतिकरण उन्होंने 22 से 25 मई, 1965 में चार व्याख्यानों में दिए गये भाषण में दिया। उनके अनुसार एकात्म दर्शन का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता में पर्याप्त संतुलन रखते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है। अपने एकात्म मानव दर्शन में वे मानव को विभाजित करके देखने के पक्ष में नही थे बल्कि एक मानव के सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से सम्बन्ध के पक्षधर थे। (2)

पं. दीनदयाल उपध्याय का एकात्म मानव दर्शन का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक मानव को सम्मानजनक और गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना था, तथा इसके साथ ही अन्त्योदय अर्थात् समाज के सबसे निचले स्तर पर स्थित मानव के जीवन में पूर्णरूपेण सुधार करना था।

पं. दीनदयाल उपाध्याय पश्चिमी 'मार्क्सवादी समाजवाद' और 'पूंजीवादी व्यक्तिवाद के पक्षधर नही थे। उनके अनुसार ये दोनों विचारधाराएँ भारत के लिए अव्यावहारिक सिद्धांत है। उनका मानना था कि ये दोनों विचारधाराएँ केवल मानव के बाहरी शरीर और आंतरिक मन की आवश्यकताओं पर ही विचार करती है। अतः ये दोनों मानव के भौतिकवादी उद्देश्य पर आधारित है। वे जोर देकर कहते है कि एक मानव का सम्पूर्ण विकास करने के लिए इन दोनों विचारधाराओं के साथ साथ आत्मिक विकास भी परम आवश्यक है। यद्यपि वे पश्चिमी संस्कृति के विरोधी थे तथापि इसके बावजूद वे आधुनिक तकनीकी और पश्चिमी विज्ञान के समर्थक थे। (3)

पं. दीनदयाल उपाध्याय विकेंद्रीकरण व्यवस्था के पक्षधर थे। वे तमाम सामाजिक क्षेत्रों के राष्ट्रीयकरण के विरोधी थे। उनका मानना था कि शासन को व्यापार में दखल नही देना चाहिए। और व्यापारी के हाथ में शासन भी नही आना चाहिए। ये दोनों ही बातें समाज के हित में है। उनका मानना था कि भारतीय शासन का उद्देश्य अन्त्योदय की कल्पना के अनुरूप ही होना चाहिए। पं. दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भारत अपनी सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण विश्व में सर्वोत्तम रह सकता है। (4-6)

अंततः यह एकात्म मानव दर्शन न केवल राजनितिक बल्कि सामाजिक, आर्थिक और लोकतांत्रिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है। एकात्म मानव दर्शन भारत जैसे कल्याणकारी विचारधारा को मानने वाले देश के लिए सदैव प्रासंगिक रहेगा। (7)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे0 सी0:1972 "विद्यालय प्रशासन" , आर्य बुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली–51
2. भिषीकर, चन्द्रशेखर परमानन्दः1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खण्ड–5 (राष्ट्र की अवधारणा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
3. उपाध्याय,दीनदयालः2007, दशम् संस्करण, "राष्ट्र जीवन की दिशा", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004
4. उपाध्याय,दीनदयालः2007, अष्टम् संस्करण, "राष्ट्र चिन्तन", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004
5. उपाध्याय, दीनदयालः2004, नवम् संस्करण, "एकात्म मानववाद", जागृति प्रकाशन,नोएडा–201301
6. उपाध्याय, दीनदयालः1991, द्वितीय संस्करण, "पोलिटिकल डायरी" सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नई दिल्ली–110055
7. उपाध्याय, दीनदयालः2006, चतुर्थ संस्करण, "भारतीय अर्थ–नीति, विकास की एक दिशा", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004